अजीतचरित्र महाकाव्य ऐतिहासिक अध्ययन

डॉ गोविन्द राम चरोरा

संस्कृत विभाग, महारानी श्री जया राजकीय महाविद्यालय भरतपुर

AJITCHARITRA EPIC HISTORICAL STUDY

Dr. Govind Ram Charora

Department of Sanskrit, Maharani Shri Jaya Govt. College, Bharatpur

IJRSSH

अपारे काव्यरांसारे कविरेक प्रजापतिः ।
यथास्मै रोचते विश्वं तथेदं परिवर्तते।।'

ABSTRACT

The poet is the creator of the immense poetic world. It structures the infinite poetic world according to its interest with its extraterrestrial description. The intention of the above statement of Acharya Anandvardhan is to render the extraordinary importance of the poet. It does not mean that the poet is a resident of Kalpana Lok and he has nothing to do with the environment in which he is living. There may be exaggeration in the description of the poet, but the details of the events of the country remain incidentally in it. If the description of the events is mainly implied, then the importance of that poem increases from the historical point of view, or the poet presents the exact details of the events related to a great man of his contemporary, or by reducing the eternal values of life in the life of great men, the nation If it contributes to the cultural upliftment of India, then that poetry acquires the name of historical poetry.

सार :—कवि अपार काव्य संसार का प्रजापति होता है। यह अपने लोकोत्तरवर्णना- नैपुण्य से अनन्त काव्यजगत् की संरचना अपनी रुचि के अनुसार करता है। आचार्य आनन्दवर्धन के उक्त कथन का आशय कवि के असाधारण महत्त्व का प्रतिपादन करना है। इसका यह आशय तो कदापि नहीं है कि कवि कल्पना लोक का वासी होता है तथा जिस परिवेश में वह रह रहा है उससे उसका कोई लेना-देना ही नहीं। कवि के वर्णन में अतिरञ्जना हो सकती है परन्तु देशकाल की घटना का ब्यौरा आनुषङ्गिक रूप से उसमें रहता ही है। यदि घटनाओं का ब्यौरा ही प्रामुख्येन विवक्षित होता है तो उस काव्य का महत्त्व ऐतिहासिक दृष्टि से और बढ़ जाता है अथवा कवि अपने समकालीन किसी महापुरुष से सम्बन्धित घटनाओं का यथातथ्य ब्यौरा प्रस्तुत करता है, अथवा जीवन के शाश्वत मूल्यों को महापुरुषों के जीवन में घटाते हुए राष्ट्र के सांस्कृतिक उत्थान में योग देता है तो वह काव्य ऐतिहासिक काव्य की संज्ञा प्राप्त कर लेता है।

राजस्थान की रियासतों के आश्रय में अथवा स्वतन्त्र रूप से लिखे गये ऐसे सैकड़ों संस्कृत काव्य समसामयिक ऐतिह्य को प्रकट करते हैं। इनमें ईश्वरविलासमहाकाव्य, हम्मीरमहाकाव्य, अजित्तोदयमहाकाव्य, भीमप्रबन्धमहाकाव्य, शत्रुशल्यचरितमहाकाव्य, रामविलासमहाकाव्य, सुर्जनचरितमहाकाव्य, राजप्रशस्तिमहाकाव्य, बलवन्तसिंहयशप्रताप. कर्णकुतूहल, माधवस्वातन्त्र्यम् एवं अजीतचरित्रमहाकाव्य आदि प्रमुख हैं।

अजीतचरित्रमहाकाव्य जोधपुर के महाराजा अजीतसिंह के लिए ही लिखा गया है। तत्कालीन इतिवृत का परिज्ञान कराने वाली प्रकृत काव्यकृति का महत्व इसलिए और बढ जाता है कि इसके प्रणेता बालक बालकृष्णशर्मा दीक्षित, अजीतसिंह के समकालीन थे। अजीतसिंह की आज्ञा से ही उक्त ग्रन्थ का प्रणयन किया गया। स्वयं कवि ने लिखा है-

आज्ञाकृता तेन नराधिपेन, राठौडवशाभरणोत्तमेन ।

औदीच्यज दीक्षितबालकृष्णशर्माणमेनं विबुधैकभक्तम् ।।[3]

आलोच्य कृति से अजीतसिंह एवं इनके पूर्ववर्ती शासकों के समकालीन प्रमुख घटनाओं का ब्यौरा तो हमें मिलता ही है साथ ही साथ तत्कालीन भौगोलिक, राजनैतिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक जानकारी का भी दिग्दर्शन होता है।

पाण्डुलिपि रूप में प्राप्त, अद्यावधि अप्रकाशित अजीदश सम मे विभक्त है। विदित ही है कि उक्त काव्यकृति की रचना महाराजा आसिंह के लिए की गई है परन्तु इसके दश सर्गों में से प्रारम्भ के छ सगों में अजीतसिंह के पूर्ववस शासकों का है। अन्तिम चार सर्ग अजीतसिंह के लिए समर्पित है।

"मङ्गलादीनि हि शास्त्राणि"[4] इत्यादि भगवान् महामायकार की उक्ति को मन मै जगज्जननी भगवती एवं श्रीगणेशवन्दना द्वारा ग्रन्थारम्भ किया गया है। तदनन्तर अधिक वंश का सम्बन्ध सूर्यान्वयी वैवस्वत मनु से स्थापित कर उसके वंशज इ{वाकु[5] के देश में mपन्न मरु को यहाँ का संस्थापक शासक बताया गया है। ध्र्मपरायण मरु यहाँ पुष्करस्नान के लिए, एवं उक्त स्थली को अपनी धार्मिक क्रियाओं के अनुरूप पाकर पुष्कर के निकट है थाम् बनायी। मरु ने ही मरुपुरु नामक नगर बसाया जो अब मन्दपुर के नाम से प्रसिद्ध

IJRSSH

है[6]। मारवाद के मरुभूमि नाम के विषय में बहुविध विचार प्रचलित है।[7] परन्तु अजीतचरित्र में बताया गया है कि यहाँ राज्यस्थापना मरु ने की; अतः उसी के नाम से यह मरुभूमि प्रसिद्ध है।[8]

कालान्तर में मरु के पश्चात् इस वंश में शव्य[9] का उल्लेख कवि ने किया है। ये महाभारत में प्रसिद्ध शल्य ही है। महाभारत युद्ध में शल्य की भूमिका का दिशद् वर्णन कवि ने तृतीय सर्ग का विषय बनाया है। शल्य के पश्चात् कौन-कौन शासक यहाँ हुए, इस विषय में केवल इतना कहकर कवि आगे बढ़ जाते हैं कि शल्य के पश्चात् बहुत विशद् रूप से मिलता है। ग्रन्थ-गौरव के भय से उनका वर्णन यहाँ नहीं किया जा रहा है।[10]

प्रतापी शासक हुए। उनका वर्णन पुराणों में शल्य के पश्चात् सीधे राव योद्धा (जोधा) से प्रारम्भ किया गया है।[11] राव योद्धा एवं अजीतसिंह के बीच के शासकों का उल्लेख चतुर्थ सर्ग में किया गया है जो क्रमशः इस प्रकार हैं- राव योद्धा - रावसूजा-रावबाघा- गाद्रेय (राव मालदो)- मोटा राजा उदयसिंह-सूरसिंह- गजसिंह-जसवन्तसिंह।

उपर्युक्त शासकों से सम्बन्धित जिन रोचक महत्वूपर्ण तथ्यों का समायोजन इस काव्य में किया है, वे निम्न प्रकार हैं:-

1. यहाँ शव योद्धा राठौड़ वंश के प्रवर्तक हुए[12] परन्तु इतिहास इसको नहीं मानता।
2. राव बाघा के कोई सन्तान न होने पर उन्होंने हरिद्वार में गंगातट पर जाकर गङ्गा स्तुति की। फलस्वरूप उन्हें गाय नाम का पुत्र प्राप्त हुआ।[13]
3. सुधीजनों को प्रचुर दान देने से गाय का ही नाम मालदो (मालदेव) हुआ।[14]
4. महाराजा उदयसिंह का (कीर्ति, बल, कान्ति, वंश, श्री, एवं शरीर) सब कुछ महान होने से मोटा राजा नाम प्रसिद्ध है।[15]
5. मोटा राजा उदयसिंह के समय से ही इस कुल में 'महाराजा' पद धारण करने लगे।[16]

उक्त शासकों की उत्पत्ति एवं मुक्ति की तिथियों का उल्लेख इस कृति में नहीं किया गया है। कवि ने पाँचवाँ सर्ग पूरा जसवन्तसिंह के लिए लिखा है। जसवन्तसिंह से सम्बन्धित जिन प्रमुख तथ्यों को इसमें अनुस्यूत किया है, वे निम्न हैं-

IJRSSH

1. जसवन्त सिंह के समय में मारवाड़ पर म्लेच्छों का अधिक दबाव था। म्लेच्छेतर जनता पर अधिक अत्याचार हो रहे थे। जसवन्तसिंह अन्त तक म्लेच्छों से लड़ते रहे।[17]

2. पुत्रजन्मोत्सव पर कारागृह से बन्दीजनों को मुक्त करने की प्रथा थी।[18]

3. ज्येष्ठ पुत्र होने परं भी जसवन्तसिंह का इनके पिता गजसिंह ने अपने समय में ही राज्याभिषेक कर दिया था।[19]

4. महाराजा जसवन्तसिंह का विवाह चन्द्रवंशी धर्मपाल यादव की पुत्री से हुआ।[20] अजीतसिंह का जन्म इसी यादव रानी की कोख से हुआ।

5. जसवन्त सिंह की यादव रानी ने भादौं शुक्ला सप्तमी संवत् 1735 को गर्भधारण किया[21] तथा इसके लगभग चार माह पश्चात् जसवन्तसिंह का स्वर्गवास पौष शुक्ला दसमी संवत् 1735 को हो गया।[22]

छठे सर्ग में कवि ने अजीतसिंह की माता यादवरानी के जन्मान्तर का वर्णन कर उसे दिव्य पृष्ठभूमि प्रदान की है। काव्यात्मक रूप से तो यह ठीक है परन्तु ऐतिहासिक दृष्टि से यह वर्णन हज़म होने योग्य तो कतई नहीं।

6. अन्तिम (सात से दश तक) चार सर्गों में अजीतसिंह के जन्म से राज्याभिषेक तक की ही प्रमुख घटनाओं का चित्रण हुआ है। निष्कर्ष रूप में कतिपय निम्न तथ्य उभरकर सामने आते हैं-

अजीतसिंह सात माह के ही पैदा हो गये।[23] अतः ज्येष्ठ पुत्र होने से राज्य के उत्तराधिकारी बने। इनका जन्म संवत् 1735 चैत्र कृष्णा चतुर्थी को हुआ।[24] औरङ्गजेब ने पत्र भेजकर राठौड़ों को दोनों पुत्रों सहित दिल्ली उपस्थित होने का आदेश दिया।[25] तदनुसार राठौड़ दिल्ली पहुँचे। औरङ्गजेब ने उन्हें बुलाने के लिए दूत भेजे। दूतों के उत्तेजनापूर्ण वचनों से भी राठौड़ सरदार यह सोचकर चुप रहे कि दोनों राजपुत्र व रानियाँ किंवा सम्पूर्ण कुल यहीं है और यवनाधिपति शत्रु प्रबल है। यहाँ भगवान् ही सहायक हैं।[26]

राठौड़ सरदार आकर औरङ्गजेब से मिले और बालक अजीतसिंह को विधिपूर्वक राज्य देने की प्रार्थना की[27] परन्तु औरङ्गजेब ने दोनों पुत्रों को तत्काल अपने समक्ष उपस्थित करने पर ही राज्य देने की बात कही।[28] बात बनती न देख राठौड़ सरदार अकालयुद्ध को टालकर वापस अपने दिल्लीस्थ निवास[29] पर आ गये एवं रात्रि को रानी के साथ मन्त्रणा की कि दोनों कुमारों एवं रानियों को यहाँ से स्वदेश ले जाया

IJRSSH

जाय।[30] इसी बीच औरङ्गजेब के दूत आकर राठौड़ों को कटुवचन कहने लगे। राठौड़ों ने राजपुत्रों को निकाल दिया था। परन्तु शाही सैनिक इस विचार से मूढ हो गये कि राजपुत्रों एवं उनकी माताओं को राठौड़ों ने यहीं नगर में छिपा दिया है।[31] इधर राठौड़ों को भी क्रोध आ गया; अतएव दोनों ओर से युद्ध हुआ। स्वामी के बालक होने एवं समक्ष न होने पर भी क्षत्रियों का उत्साह प्रशंसनीय था।[32]

एतदनन्तर नवें सर्ग में अजीतसिंह के राणा जयसिंह की पुत्री से विवाह का उल्लेख है[33] औरङ्गजेब की मृत्यु के पश्चात् उसके दोनों पुत्रों में संघर्ष हुआ और शाह दिल्ली का शासक बना।[34] इसी अवसर पर अजीतसिंह ने जोधपुर पर अधिकार कर लिया।[35]

दिल्लीपति दक्षिण में नर्मदा के इलाके में गया हुआ था। तभी अजीतसिंह ने उसे कूर्मराज की भूमि लौटाने को कहा[36], परन्तु शाह ने उसे नहीं माना। कूर्मराज और अजीतसिंह दोनों ने राणा से सन्धि की तथा कूर्मराज जयसिंह का विवाह भी अपनी पुत्री से राणा ने कर दिया। दोनों जोधपुर आ गये[37]

अजीतसिंह व कूर्मराज जयसिंह दोनों ने सांभर आकर यवनों को मार भगाया।[38] तब शाह ने सैयद हुसैन को सेना लेकर सांभर भेजा।[39] भयङ्ककर युद्ध हुआ और इस युद्ध में सैयद हुसैन मारा गया।[40] सांभर पर कब्जा कर अजीतसिंह जोधपुर आ गया तथा जयसिंह जयपुर।[41] तदनन्तर अजीतसिंह ने अजमेर पर आक्रमण किया।[42] यवनों द्वारा एक माह में दुर्ग खाली कर देने एवं प्रभूत दण्डराशि[43] देने पर अजीतसिंह वहाँ से लौटा और लाख्यनगर[44] में अपना विवाह कर जोधपुर आ गया। यहाँ से नागौर जाकर इन्द्रसिंह के पुत्र को दण्ड दिया[45] तथा नागौर इन्द्रसिंह को सौंप, पुनः सांभर पहुंच कर वहीं जयसिंह को बुलाया तथा मन्त्रणा कर रामसीर नामक नगर को गये।[46] दोनों ने अजमेर के पास मिलकर दिल्लीपति से सन्धि कर ली।[46] वहां से दोनों चिन्तामुक्त होकर पुष्कर आयें तथा बहुविध दान दिये।[48] पुष्कर से जयसिंह को विदा कर अजीतसिंह जोधपुर आ गये। जोधपुर आकर अजीतसिंह ने विधिवत् अपना राज्याभिषेक कराया। प्रकृत कृति में राज्याभिषेक- पर्यन्त का ही वर्णन है![49]

उक्त काव्य अजीतसिंह की आज्ञा से लिखा गया है। कवि उसका आश्रित है; अतः वर्णन प्रशंसापरक अवश्य है किन्तु जिन ऐतिहासिक तथ्यों का समायोजन इसमें हुआ है उनमें से अधिकांश अन्य ऐतिहासिक

IJRSSH

ग्रथों से प्रमाणित हैं। संभवतः उन्हीं घटनाओं को महत्त्व दिया गया है जिनसे अजीतसिंह एवं उनके पूर्वजों का पराक्रम झलकता है।

प्रत्येक सर्ग की पुष्पिका में इसे महाकाव्य लिखा गया है परन्तु महाकाव्य के मात्र एक लक्षण-आठ से अधिक सर्ग होने चाहिए, को छोड़कर किसी का भी निर्वाह इसमें नहीं हुआ है। काव्यात्मक दृष्टि से इसका महत्व भले ही कम हो, परन्तु यह एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक दस्तावेज है इसमें कोई सन्देह नहीं- और संभवतः यही इसके प्रणेता दस्तावेज है इसमें कोई सन्देह नहीं- और संभवतः यही कवि का ध्येय भी रहा है। अजीतसिंह को आश्रय बनाकर लिखे गये एक अन्य महाकाव्य अजितोदय से यह रचना पूर्ववर्ती है।

सन्दर्भ :-

1. ध्वन्यालोक, उद्योत- 3, कारिका-42-43 की वृत्ति, -26-

2. अजीतसिंहो धरणीतलेरिमन्, जातस्तदर्थ कुरु काव्यबन्धम् ।।

अजीतचरित्र महाकाव्य 1/16

3. अजीतचरित्र महाकाव्य, 1/8

4. महाभाष्य- अध्याय 1, पाद 1 आफ्रिक-- 1,

5. सूर्यान्वये योत्र मनुर्बभूव वैवस्वताख्यः क्षितिपार्थिवावि:। वही 3 / 1

6. ततः परं दुर्गसमीप एवं चकार राजा नगरं विचित्रम् ।

मरोः पुरं तद्विदितं त्रिलोक्या तं चाधुना मन्दपुरं वदन्ति ।। वही 2/16

7. सरित्पञ्जाबदेशीया स्वच्छवारिमनोहरा।

मण्डोवरपुरोपान्ते स्वच्छन्दं प्रवहत्पुरा ।।

चिनानि च प्रदृश्यन्ते तत्र तत्रस्थलेऽधुना।

श्रीमदावडशक्त्याख्या सञ्जाता चारणान्वये ।।

तस्याः शापवशात्काले विक्रमस्य महीपतेः ।

त्यक्त्वा मण्डोवरोपान्तं नदी दूरं विनिर्गता ।।

तेन मण्डोवरप्रान्तो बभूव जलवर्जितः ।

IJRSSH

मरुस्थलीति संज्ञास्य देशस्यासीत्ततः परम् ।।

यशवन्तयशोभूषणम्: मुरारिदानकृत, आकृति-1, पद्य 3,4,5,6

8. वंशे तदीयेत्र मरुर्बभूव यन्नामतोयं मरुरेव जातः ।

मरोश्चरित्रं कथयामि किञ्चिद वक्तुं न शक्यं सकलं कदाचित् ।। अजीतचरित्रमहाकाव्य, 1/12

9. तदन्वये शल्य इति प्रसूतो राजाधिराजो मरुभूमिभर्ता ।

को वा विशेषो धरणीस्थ राज्ञां वाञ्छन्ति देवा अपि यत्सहायम्।। वही 3/1

10. तदन्वये भूपतयो बलिष्ठा वरानुसारेण तथैव जाता।

तेषां गुणा वर्षशतैरगण्या ज्ञात्वेति वा ग्रन्थबहुत्वभीत्या |

मया पृथक्त्वेन न वर्णिताश्च सर्वे पुराणे विशदीकृतास्ते ।। वही; 4 / 1,4

11. तदन्वये भूपतिरेष जातो देहाश्रितः क्षत्रियधर्म एव रावादि योद्धा खलु नाम यस्य जानन्ति वित्तं भुवनत्रयेपि ।। वही 4/5

12. राठौडवंशे खलु वंशकर्ता जातः पृथिव्यामयमेव राजा। वही 4/6

13. राज्ञः सुतस्तस्य बभूव नात्र स प्रस्थितो दिग्विजयस्य दम्भात्। गङ्गां हरिद्वारगतामुपेत्य ससैनिकैरतत्र तपश्चकार ।। वही 4/9,17

14, गाङ्गेय नाम्नः प्रथितः सुतोभूत श्रीमालदेराय इतीह नाम्ना द्रव्यप्रदानेन सुधीजनेभ्यो नाम स्वकीयं स चकार सार्थम् ।। वही 4/19

15. कीर्त्या महत्त्या महता बलेन कान्त्या महत्त्या महता गृहेण ।

श्रिया महत्त्या वपुषो महत्त्वाद्बभूव मोटा इति नाम तस्य ।। वही - 4 / 25

16. तदा प्रभृत्येव कुलं तदीयं प्राप्तं महाराजपदं प्रतीतम् ।

रसातलस्थान्यकुलोद्भवानाभप्राप्यमेतद्धरणीपतीनाम् ।। वही - 4 / 27

17. अनेन दुःखेन च पीडितास्मि म्लेच्छाधिपत्वेन विलज्जिताहम्।

म्लेच्छाधिपास्ते बहुपीडयन्ति प्रजां मदीयां परधर्मभेदात्।। वही, 5/6

18. स्वयं विमुक्तः पितृणामृणाच्च कारागृहे स्थान्मुमुचे तथैव । वही - 5 / 15

IJRSSH

19. ज्येष्ठे सुते सत्यपि तस्य तातो मद्देशपोयं भवितेति मेने।

ज्येष्ठं तिरस्कृत्य पिता स्वकाले ग्रहप्रसादान्नृपतिं चकार ।। वही- 5 / 16,18

20. चक्रे विवाहं जसवन्तसिंहो राजाधिराजो ननु राजपुत्र्याः ।

यथैव रामो जनकात्मजायाः सूर्यान्वयोयं विधुवंशजायाः।। वही, 5/25, एवं षष्ठ सर...

21. पञ्चत्रिंशाधिके तेन संवत्सप्तदशे शते । भाद्रशुद्धस्य सप्तम्यां मृद्गृहीता तु योगिना ।।

तदैव सा यादवराजपुत्री गर्भं दधौ भर्तृमनोनुकूलम् ।। वही, 5/50-51

22. राजा गर्भगतं सुतं तमचिरात् दृष्ट्वा परं योगिनं

म्लेच्छानां क्षयकारकं स्वसुखदं श्रेष्ठं प्रजापालकम् ।

पञ्चत्रिंशयुतेब्द सप्तदशमे प्रान्ते शतेन प्लुते ।

पौषस्यापरपक्षदिविगतदिने मुक्तिं गतो राजराट्।। वही, 5/53

23. अन्तर्हितो बालक इत्थमुक्त्वा तदा जनन्याः सुखमत्रजातम् ।

स सप्तमे मासि तदैव जातो ग्रहानुकूलं समयं समीक्ष्य ।। वही, 7/5

24. पञ्चत्रिंशाधिके भूमौ संवत् सप्तदशे शते ।

अजीतसिंहोजनितश्चैत्राघश्रुतिवासरे।। वही, 7/6

25, एतस्मिन्नन्तरे पत्रं दिल्लीपस्य समागतम् ।

श्रुतं राज्ञः सुतौ जातौ तावानयत बाहुजाः ।। वही,7/24

26. दूतान् वक्रवचः परायणमुखान् संवीक्ष्यते बाहुजा

अन्योन्यं कथयाम्बभूवुरखिलैर्वाच्यं न वक्रं वचः ।

तौ द्वौ राजसुतौ च राजमहिलाश्चात्रास्ति सर्वं कुलं

तद्राज्ञो यवनाधिपश्च सुतरां वैरी सहायो हरिः ।। वही, 7/32

27. तेष्वद्य वर्ण्यो जसवन्तसिंहः स्वर्ग गतस्तस्य सुतौ च बालौ।

तावागतावद्य तयोश्च यत्नं कुर्वेधुना भूपति नीतियुक्त्या ।। यही - 7 / 29

28. समस्तानिति प्राह दिल्लीपतिस्तान् मया तत्सुतौ दृष्टिमार्गेवलोक्यौ ।

IJRSSH

ततोहं प्रदास्यामि देशं तदीयं विदायं च भिन्नं तथा बाहुजेभ्यः।। यही - 8 / 2

29. अकाले रणं निन्दितं नीतिवदिभर्विचार्येति सर्वे तदा प्राहुरेनम्।

स्वकीये निवेशे समागत्य सर्वे प्रणद्धं निजे राजगेहे युयुत्से ।।वही - 8/6

30. प्रेषणीयावतो देशे धात्रीभ्यां सहितावुभौ ।

युद्धेस्मिन् गतिरस्माकं खगेनैव न संशयः ।। वही- 8 / 9,11

31. सुतावद्य निष्कासितौ बाहुजैर्वा ततः पूर्वमेवागताः स्थापयित्वा ।

सधात्र्यौ च गुप्तीकृतौ वा नगर्यां स इत्थं विचारेण मूढो बभूव ।। वही - 8 / 14.

32. न पूर्वं न पश्चात्कदाचिन्न दृष्टस्तथा योद्धृणां यादृशः संयुगोयम् ।

अहो क्षत्रिया बालभर्त्तार एते समक्षं विना तेत्र युद्ध्यन्ति पत्युः ।। वही - 8 / 33

33. जयसिंहाख्य राणेनोक्तमाहूय पुरोहितम् ।।

राज्ञे चाजीतसिंहाय प्रदास्यामि सुतां मम ।। वही- 9/2,8

34. गतो मृत्युमोरङ्गजेबस्तदानीं सुतौ द्वौ मिथश्चक्रतुर्युद्धमेकः ।

तयोर्मृत्युमाप्तः परः शाहशर्मा बभूवाथ दिल्लीपतिश्छत्रधारी।। वही- 9/13

35. अगत्वा गृहाण्यागतो राजभूमौ नृपो जोधपुर्यां स्थितो निर्भयः सन्।

श्रुतं तेन दिल्लीश्वरेणेति चित्ते धृतं कोपि वीरो बलिष्ठो नृपोयम् ।। वही- 9/14-15—

36. प्रयातोथ दिल्लीपतिर्दक्षिणस्यां गतो नर्मदातीरभूमौ तदानीम् ।

नृपः प्राह दिल्लीपतिं कर्मराजप्रधानाय भूमिस्तदीयार्पणीया ।। वही- 9 /17

37. विवाहो जयसिंहस्य- • कारितः उभावपि ततः पश्चाज्जोधपुर्या समागतौ वही - 9 / 21

38, भूपालो जयसिंहोपि राज्ञः सार्द्ध सम्प्रस्थितः।।

उभावपि गतौ तत्र सम्भराख्ये पुरे तदा । वही- 9/23,24

39. महाम्लेच्छो हुसेनाख्यः सैदजात्या च विश्रुतः।

प्रेषितः पातिसाहेन बलेन महतागताः।। वही- 9/25

40. हुसेनो यदा पातितो वीरभूमौतदीयाश्च सम्बन्धिनः सर्व एव । वही- १/32

IJRSSH

41. ततः परं यथाकालं मन्त्रं कृत्वा परस्परम् ।

स्वे स्वे भवने ययत् राजानौ तावुभावपि ।। वही - 9/36-27

42. ततोजीतसिंहो गुणानां प्रदाता गतश्चाजमेरप्रहारायर्णम् ।

भटैस्तत्रमूर्च्छाः प्रक्लृप्ता विभागात् स्वनालीमुखाच्चियक्षिपुः केपिगोलान् ।। वही - 10/1

43; तदोचुः प्रगल्भा महाराजपार्श्वे ददात्येष दण्डं प्रभूतं गृहाण ।

स्थितिर्मासमात्रं ततो दुर्गमेनं त्वदीयान् प्रदत्वा गमिष्यत्यधीनः।। वही, 10/5

44. तथेति राजाह ततो गृहीत्वा यथेप्सितं द्रव्यमितो जगाम ।

तदैव लाख्ये नगरे विवाहं कृत्वा जगाम स्वगृहे नृपेन्द्रः।।वही-10/7

45. कदा दैवविद्भिः प्रदत्ते मुहूर्ते वरे प्रस्थितोजीतसिंहो बलिष्ठः ।

गतो नागपुर्य्यामयोग्यं समीक्ष्येन्द्र पुत्रं च जग्राह दण्डं प्रचण्डम् ।। वही- 10/8

46. प्रदत्त्वा पुरीमिन्द्रसिंहाय राजा पुनः सम्भराख्ये पुरे प्रस्थितोऽयम् ।

तदा कूर्मराजं समाहूय मन्त्रं प्रकृत्वा गतौ रामसीराख्यपुर्याम् ।। वही- 10/10

47. वही - 10/12

48. यथा प्रसन्नौ भवतस्थैव कृत्वा स चिन्तारहितो जगाम ।

तावागतौ पुष्करतीर्थराजे दत्तानि दानानि बहूनि ताभ्याम् ।। वही- 10/20

49. आहूय षड्कर्मस्तान् द्विजेन्द्रान् बन्दीजनान् बाहुजवंशजातान् ।

देशान्तरस्थान धरणीसुपालान् राज्याभिषेकं नृपतिश्चकार ।। वही- 10/28

IJRSSH